Vol 9, Issue 5, 2026 **Impact Factor: 8.535** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2026.9.5.9315

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों तथा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उनके योगदान का एक अध्ययन

Dr. Santosh Kumar Jha, Scholar History

परिचय

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन आधुनिक भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण और व्यापक ऐतिहासिक प्रक्रिया है, जिसने न केवल भारत को औपनिवेशिक शासन से मुक्त कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक जागरूकता और राजनीतिक सक्रियता का भी विकास किया। यह आंदोलन केवल राजनीतिक संघर्ष तक सीमित नहीं था, बल्कि इसके पीछे सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक शक्तियों का भी गहरा प्रभाव था। भारत में उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक संगठनों का उदय हुआ, जिन्होंने समाज में जागरूकता फैलाने, सामाजिक सुधारों को प्रोत्साहित करने और लोगों को राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति संगठित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन संगठनों ने भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों और असमानताओं के विरुद्ध आवाज उठाई तथा लोगों को आधुनिक शिक्षा, सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय एकता की दिशा में प्रेरित किया। इसी प्रक्रिया में भारतीय समाज में एक नई चेतना का विकास हुआ, जिसने आगे चलकर राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत आधार प्रदान किया। इसलिए सामाजिक और राजनीतिक संगठनों की भूमिका को समझे बिना भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विकास और स्वरूप को पूर्ण रूप से समझना संभव नहीं है।

औपनिवेशिक शासन और भारतीय समाज की परिस्थितियाँ

एक जटिल औपनिवेशिक व्यवस्था और असमान विकास वाली बहुलतावादी समाज व्यवस्था में, स्वदेशी मानसिकता की पहचान को धार्मिक-सांस्कृतिक आधारों पर खोजने की प्रवृत्ति में सांप्रदायिक लामबंदी की संभावना निहित थी। ऐसी परिस्थितियों में नवजागृत हिन्दू धर्म का रचनात्मक, व्यापक और राष्ट्रनिर्माण का संदेश भी अपने 'हिन्दू' स्वरूप के कारण संदेह की दृष्टि से देखा जाने लगा। इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी ने उदार सांस्कृतिक विचारधारा की विरासत के साथ-साथ एक दुविधा भी पीछे छोड़ दी।

स्वदेशी काल के राष्ट्रवाद में हिन्दू सांस्कृतिक चेतना एक प्रमुख तत्व थी। ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्मांतरण के प्रयास राजनीतिक राष्ट्रवाद के लिए भी एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में सामने आए। राष्ट्रीय आंदोलन के समय महात्मा गांधी ने भी स्वीकार किया कि मिशनरियों की गतिविधियों ने अप्रत्यक्ष रूप से हिन्दुओं के भीतर आत्मचिंतन और आत्मअन्वेषण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

सामाजिक संगठनों का उदय और उनका योगदान

इसी समय मुसलमानों में भी एक नई चेतना का उदय हुआ, जो विदेशी शासन के अधीन होने के कारण हिन्दुओं की तरह ही पीड़ित थे। मुस्लिम समाज का एक वर्ग अपने हितों की रक्षा के लिए राजनीतिक पृथकतावाद की ओर बढ़ने लगा। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के बाद ब्रिटिश सरकार ने मुसलमानों की इस अलगाववादी प्रवृत्ति का राजनीतिक लाभ उठाने का प्रयास किया और विशेष सुविधाओं का प्रलोभन देकर इसे बढ़ावा दिया। केंद्रीय नेशनल मोहम्मडन लिटरेरी सोसाइटी, जो भारत में रूढ़िवादी मुस्लिम समुदाय का प्रतिनिधित्व करती थी, ने भी सरकार के कामकाज में बाधा न डालने का रुख अपनाया।

राजनीतिक संगठनों का विकास

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में जब हिन्दुओं के बीच राष्ट्रवाद विकसित हो रहा था, उसी समय मुसलमानों के एक वर्ग का ब्रिटिश शासन के साथ टकराव से सहयोग की ओर झुकाव बढ़ा। इससे राजनीतिक विभाजन की प्रक्रिया को बल मिला। 1890 के दशक में 1890 और 1896 को छोड़कर बंगाल से कोई भी मुस्लिम प्रतिनिधि कांग्रेस अधिवेशनों में शामिल नहीं हुआ।

एंग्लो-इंडियन समाचार पत्रों और पत्रिकाओं ने सरकार को मुसलमानों की 'निष्ठा' के आधार पर उन्हें सरकारी नौकरियों में प्राथमिकता देने के लिए उकसाया। इसके साथ ही नौकरशाही की कठोर पकड़ और नस्लीय भेदभाव की तीव्रता भी बढ़ती गई। इन परिस्थितियों ने राष्ट्रवादी हिन्दुओं में उभर रहे 'उग्रवाद' को भी प्रभावित किया। एक अन्य महत्वपूर्ण कारण यह था कि योग्य भारतीयों को सार्वजनिक पदों से वंचित रखा जाता था। यदि किसी विशेष समुदाय को प्राथमिकता दी जाती, तो इससे अलगाववाद को बढ़ावा मिलना स्वाभाविक था।

बंगाल प्रांत में सरकार द्वारा जारी परिपत्रों में कुछ शाखाओं में मुसलमानों की अधिक नियुक्ति का निर्देश दिया गया, यहाँ तक कि बिना विश्वविद्यालय की डिग्री वाले व्यक्तियों को भी नियुक्त किया जाने लगा। फुलर द्वारा एक बंगाली जिला बोर्ड के अध्यक्ष से की गई निजी बातचीत, जो एक कलकत्ता के समाचार पत्र में प्रकाशित हुई, तथा हेनरी नेविन्सन की रिपोर्ट ने न केवल हिन्दू हितों बल्कि राष्ट्रीय एकता के लिए भी गंभीर खतरा उत्पन्न किया।

1923–1924 तक आते-आते सुरक्षा की भावना सांप्रदायिक आधारों पर खोजी जाने लगी, केवल मुसलमानों में ही नहीं बल्कि कुछ हद तक हिन्दुओं में भी। आंतरिक संगठनात्मक शक्ति और राजनीतिक शक्ति को सुरक्षा के लिए आवश्यक माना जाने लगा। इस भावना को व्यक्त करते हुए कलकत्ता के एक कम प्रसिद्ध पत्र ने लिखा, "क्या हिन्दुओं के पास आज इतना समय है कि वे सरकारी नौकरियों में हिस्सेदारी पर चर्चा करते रहें? क्या वे

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

अब तक इस दासता के आकर्षण से मुक्त नहीं हुए? यदि जीवित रहना है तो स्वयं को मजबूत बनाइए।" (सारथी, कलकत्ता, 3 जनवरी 1924)।

असहयोग आंदोलन के बाद जनता में व्यापक जागृति आई। 1921–22 के दौरान हिन्दू महासभा लगभग निष्क्रिय हो गई थी। 1921 में मालाबार के मोपला विद्रोह में स्पष्ट सांप्रदायिक रंग दिखाई दिया, जिसे खिलाफत आंदोलन से प्रोत्साहन मिला। मालाबार की घटनाओं के बाद मुल्तान, अमृतसर और फिर 1923 में कलकत्ता में दंगे हुए। 1924 में मुस्लिम लीग को नया जीवन मिला।

1923 में कलकत्ता में आर्य समाजियों और स्थानीय मुस्लिम जनता के बीच भीषण सांप्रदायिक दंगा हुआ। कांग्रेस के नेता इस स्थिति में असहाय दिखाई दिए और इससे कई नेता निराश भी हुए। आत्मरक्षा के उद्देश्य से पंडित मदन मोहन मालवीय ने 30 दिसंबर 1922 को गया में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के अधिवेशन में 'संगठन आंदोलन' की शुरुआत की।

उन्होंने भारत के प्रत्येक गाँव और नगर में हिन्दू सभा और हिन्दू रक्षा मंडलियों की स्थापना पर बल दिया तथा हिन्दू महिलाओं को भी आत्मरक्षा के लिए तैयार रहने की सलाह दी। यह कहना उचित नहीं होगा कि हिन्दू महासभा के सभी नेता केवल राष्ट्रवाद के आवरण में सांप्रदायिक थे। संगठन आंदोलन का संबंध शुद्धि आंदोलन से भी जुड़ा था। स्वामी श्रद्धानंद ने इस आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई और इस्लाम तथा ईसाई धर्म में परिवर्तित हुए लोगों को पुनः हिन्दू धर्म में लाने के लिए भारत के विभिन्न भागों की यात्राएँ कीं। जब शुद्धि आंदोलन को निर्वाचन सुधारों के साथ जोड़कर खुलकर राजनीतिक रूप दिया गया, तो इससे स्थिति और जटिल हो गई और व्यापक राष्ट्रीय एकता के विकास में बाधा उत्पन्न हुई। उत्तर भारत में शुद्धि और संगठन आंदोलनों से मुस्लिम प्रेस चिंतित हो गया। इसी समय 'तबलीग' और 'तंजीम' आंदोलनों को पुनर्जीवित किया गया और उन्हें शुद्धि तथा संगठन आंदोलनों की प्रतिक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया गया।

प्रमुख सामाजिक-राजनीतिक संगठन और उनके योगदान:

- **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885):** यह सबसे बड़ा संगठन था, जिसने नरम दल (गोखले, बनर्जी) से लेकर गरम दल (तिलक) और बाद में महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग, सविनय अवज्ञा, और भारत छोड़ो जैसे जन आंदोलनों का संचालन किया।
- **क्रांतिकारी संगठन (अनुशीलन समिति, जुगांतर, HSRA):** बंगाल और पंजाब में सक्रिय इन समूहों ने (भगत सिंह, आज़ाद, अरबिंदो घोष) सशस्त्र क्रांति के जरिए अंग्रेजों के दमनकारी शासन को चुनौती दी।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

- **सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन (ब्रह्म समाज, आर्य समाज):** राजा राम मोहन राय और स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे नेताओं ने सामाजिक बुराइयों को दूर कर भारतीयों में आत्म-सम्मान और एकता की भावना जाग्रत की, जो राष्ट्रवाद का आधार बनी।
- **किसान और मजदूर सभाएं:** कांग्रेस के अंतर्गत किसानों और मजदूरों ने जमींदारों व ब्रिटिश सरकार के आर्थिक शोषण के खिलाफ संघर्ष किया, विशेषकर 1920-30 के दशक में।
- **मुस्लिम लीग (1906):** मुसलमानों के हितों की रक्षा के लिए स्थापित, जिसने बाद में पाकिस्तान की मांग में अहम भूमिका निभाई।

राष्ट्रीय चेतना का विकास

सामाजिक और राजनीतिक संगठनों के प्रयासों से भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। इस चेतना ने लोगों को जाति, धर्म और क्षेत्रीय भेदभाव से ऊपर उठकर राष्ट्र के हितों के लिए एकजुट होने के लिए प्रेरित किया। राष्ट्रीय चेतना के विकास में प्रेस, शिक्षा और साहित्य का भी महत्वपूर्ण योगदान था। विभिन्न समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और पुस्तकों के माध्यम से राष्ट्रीय विचारों का प्रसार हुआ और लोगों में स्वतंत्रता के प्रति जागरूकता बढ़ी। इन सभी प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एक व्यापक जनआंदोलन के रूप में विकसित हुआ, जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के दौरान भारत में अनेक सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों का उदय हुआ, जिन्होंने भारतीय समाज में जागरूकता उत्पन्न करने तथा राष्ट्रीय चेतना को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन संगठनों ने सामाजिक सुधार, राजनीतिक अधिकारों की मांग और स्वतंत्रता के लिए जनसमर्थन तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हालांकि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में इन संगठनों की भूमिका का उल्लेख मिलता है, फिर भी यह स्पष्ट रूप से समझना आवश्यक है कि विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक संगठनों ने राष्ट्रीय आंदोलन को किस प्रकार प्रभावित किया तथा उनके प्रयासों ने स्वतंत्रता संग्राम को किस हद तक दिशा और गति प्रदान की। विभिन्न विचारधाराओं, उद्देश्यों और कार्यप्रणालियों वाले इन संगठनों के योगदान का समग्र और विश्लेषणात्मक अध्ययन अपेक्षित है। इसलिए यह अध्ययन इस समस्या पर केंद्रित है कि सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विकास, स्वरूप और सफलता में किस प्रकार योगदान दिया तथा उनके कार्यों का भारतीय समाज और स्वतंत्रता संग्राम पर क्या प्रभाव पड़ा।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

साहित्य की समीक्षा

बिपन चंद्र (2019) ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास का विस्तृत अध्ययन करते हुए यह बताया कि विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक संगठनों ने भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके अनुसार इन संगठनों ने जनता को संगठित कर स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक जनांदोलन का रूप दिया।

सुमित सरकार (2019) ने अपने अध्ययन में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न चरणों का विश्लेषण किया और बताया कि सामाजिक सुधार आंदोलनों तथा राजनीतिक संगठनों ने मिलकर स्वतंत्रता संघर्ष को मजबूत आधार प्रदान किया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इन संगठनों की गतिविधियों ने जनता में राजनीतिक जागरूकता उत्पन्न की।

आर. सी. मजूमदार (2018) ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के विकास में विभिन्न राजनीतिक संगठनों और नेताओं की भूमिका का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। उनके अनुसार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सहित कई संगठनों ने स्वतंत्रता आंदोलन को दिशा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

तारा चंद (2017) ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास का अध्ययन करते हुए सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलनों की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि इन आंदोलनों ने सामाजिक चेतना को जागृत किया, जिसने आगे चलकर राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत किया।

अनिल सील (2017) ने अपने शोध में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रारंभिक चरणों में उभरने वाले राजनीतिक संगठनों की भूमिका का विश्लेषण किया। उनके अध्ययन के अनुसार इन संगठनों ने स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा दिया।

जुडिथ ब्राउन (2015) ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में राजनीतिक संगठनों और नेताओं के योगदान का अध्ययन किया। उन्होंने बताया कि इन संगठनों ने जनसंगठन और राजनीतिक नेतृत्व के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक स्वरूप प्रदान किया।

गेल ऑम्वेट (2014) ने अपने अध्ययन में सामाजिक आंदोलनों और संगठनों की भूमिका को रेखांकित किया। उनके अनुसार दलित, किसान और श्रमिक संगठनों ने राष्ट्रीय आंदोलन में सामाजिक न्याय और समानता के मुद्दों को प्रमुखता दी।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

शेखर बंद्योपाध्याय (2013) ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन के संबंध का अध्ययन किया। उनके अनुसार विभिन्न सामाजिक संगठनों ने जनता को संगठित कर स्वतंत्रता आंदोलन को जनाधार प्रदान किया।

रामचंद्र गुहा (2012) ने आधुनिक भारत के इतिहास में सामाजिक और राजनीतिक संगठनों के योगदान का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि इन संगठनों ने राष्ट्रीय पहचान और लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बिपन चंद्र, मृदुला मुखर्जी एवं आदित्य मुखर्जी (2009) ने अपने अध्ययन में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को जनआधारित आंदोलन के रूप में प्रस्तुत किया और बताया कि विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों के सहयोग से यह आंदोलन सफल हुआ।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों की भूमिका का अध्ययन करना।
2. उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में स्थापित प्रमुख सामाजिक और राजनीतिक संगठनों के उद्देश्यों तथा कार्यों का विश्लेषण करना।
3. सामाजिक सुधार आंदोलनों के माध्यम से समाज में उत्पन्न राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन करना।
4. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में विभिन्न संगठनों के योगदान और उनके प्रभाव का मूल्यांकन करना।
5. सामाजिक और राजनीतिक संगठनों द्वारा भारतीय समाज को संगठित करने और स्वतंत्रता आंदोलन को गति प्रदान करने की प्रक्रिया का विश्लेषण करना।

परिकल्पना

1. सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विकास और विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
2. सामाजिक सुधार आंदोलनों ने भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना के विकास को प्रोत्साहित किया।
3. विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक संगठनों की गतिविधियों ने भारतीय जनता को स्वतंत्रता आंदोलन के लिए संगठित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
4. सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों की विचारधाराओं और कार्यप्रणालियों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की दिशा और स्वरूप को प्रभावित किया।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

5. इन संगठनों के प्रयासों ने भारतीय समाज में सामाजिक जागरूकता, एकता और राष्ट्रवादी भावना को सुदृढ़ किया।

अध्ययन की आवश्यकता

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है, क्योंकि इन संगठनों ने समाज में जागरूकता फैलाने, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने और लोगों में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। विभिन्न संगठनों ने अपने-अपने विचारों, उद्देश्यों और गतिविधियों के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूत आधार प्रदान किया। हालांकि इन संगठनों के कार्यों और योगदान का उल्लेख इतिहास में मिलता है, फिर भी उनके प्रभाव, कार्यप्रणाली और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में उनकी वास्तविक भूमिका का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन आवश्यक है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझा जा सकेगा कि सामाजिक और राजनीतिक संगठनों ने किस प्रकार जनता को संगठित किया, राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया और स्वतंत्रता संग्राम को गति प्रदान की। इसलिए वर्तमान समय में इस विषय का अध्ययन करना आवश्यक है, ताकि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के ऐतिहासिक और सामाजिक आयामों को अधिक स्पष्ट और व्यापक रूप में समझा जा सके।

संदर्भ

[1.] ओमवेट, जी. (2014). दलित और लोकतांत्रिक क्रांति. सेज पब्लिकेशन्स.

[2.] गुहा, आर. (2012). गांधी के बाद का भारत. हार्परकॉलिन्स.

[3.] चंद्रा, बी. (2019). भारत का स्वतंत्रता संग्राम. पेंगुइन बुक्स.

[4.] चंद्रा, बी., मुखर्जी, एम., और मुखर्जी, ए. (2009). स्वतंत्रता के बाद का भारत. पेंगुइन बुक्स.

[5.] तारा चंद. (2017). भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास. प्रकाशन विभाग.

[6.] बंद्योपाध्याय, एस. (2013). प्लासी से विभाजन तक और उसके बाद: आधुनिक भारत का इतिहास. ओरिएंट लॉन्गमैन.

[7.] ब्राउन, जे. (2015). गांधी का सत्ता में उदय: भारतीय राजनीति 1915–1922. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.